Quest Journals
Journal of Research in Business and Management
Volume 9 ~ Issue 11 (2021) pp: 01-06
ISSN(Online):2347-3002
www.questjournals.org

Research Paper

भारतीय रेशम उद्योग :एक वैश्विक परिदृश्य

दीपिका शर्मा * एवं लक्ष्मण परवाल
स्वामी विवेकानन्द वाणिज्य महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)
kdeepikasharma85@gmail.com

सारांश –
सेरीकल्चर एक कला तथा विज्ञान का मिश्रित स्वरूप है। जिसमें रेशम के कीटों के पालन की कला में विज्ञान के सम्मिश्रण से रेशम का उत्पादन किया जाता है। यह एक कृषि आधारित, अल्प उद्यम तथा अल्प पूंजी निवेश पर अधिकतम आय प्रदान करने वाला उद्योग है। रेशम जगत में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहॉ रेशम की सभी प्रजातियों का उत्पादन किया जाता है। भारत की रेशम उत्पादन क्षमता ने भारत को विश्व में द्वितीय स्थान प्रदान किया है, यद्यपि भारत का रेशम उत्पादन में द्वितीय स्थान है किन्तु चीन की उत्पादन क्षमता की तुलना में यह मात्र 15 प्रतिशत है। रेशम को उद्योग के रूप में विकसित करने के उददेश्य से किए जाने वाले प्रयासों के परिणाम स्वरूप विगत 5 वर्षो में भारत से किए जाने वाले रेशम के निर्यात में कमी के पश्चात पुनः वृध्दि एवं उत्पादन में सतत वृध्दि हुई है। केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा रेशम के आयात में कमी, मांग और पूर्ति के अनुपात में सुधार, निर्यात में वृध्दि, रोजगार के नवीन अवसर, महिलाओं को सेरीकल्चर में आत्मनिर्भर बनाना, उन्नत प्रजाति के बीजों को विकसित करना, नवीन तकनीकी का प्रयोग एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पिछडे हुए लोगो को सेरीकल्चर से जोडकर उनके उत्थान की दिशा में अथक प्रयास किए जा रहे है। जिसके परिणाम स्वरूप भविष्य में भारत निश्चित ही रेशम उत्पादन में आत्मनिर्भर बन जाएगा।

विशिष्ट शब्द – *सेरीकल्चर, ककून, आयात, निर्यात, सामर्थ्य*

Received 08 November, 2021; Revised: 22 November, 2021; Accepted 24 November, 2021 © The author(s) 2021. Published with open access at www.questjournals.org

प्रस्तावना –

वर्तमान परिदृश्य में सेरीकल्चर (रेशम उत्पादन) सम्पूर्ण विश्व की आर्थिक स्थिति के उत्थान में अपना योगदान प्रदान कर रहा है। भारत के पक्ष में विशेष रूप से भारत के ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक स्थिति के उत्थान में इसका अहम योगदान है। 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में जापान सम्पूर्ण विश्व में उत्पादित रेशम का 70 प्रतिशत उत्पादन करता था किंतु शताब्दी के मध्य में जापान ने रेशम उत्पादन से अपने हाथ पीछे ले लिए जिसके परिणाम स्वरूप चीन रेशम उत्पादन में उभर कर सामने आया और वर्तमान में रेशम उत्पादन की दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व में चीन का प्रथम स्थान है। वही दूसरी ओर भारत विश्व में उत्पादित रेशम का 8 प्रतिशत उत्पादन करके द्वितीय स्थान पर है [1]।

सम्पूर्ण विश्व में से लगभग 22 देशों में रेशम का उत्पादन किया जाता है। इन 22 देशों में से वृहद स्तर पर चीन, भारत, उज्बेकिस्तान, ब्राजील, जापान, कोरिया, थाइलैंड, वियतनाम, ईरान में रेशम उत्पादन एक उद्योग के रूप में प्रगतिशील है जिससे इन देशों की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य देशों जैसे केन्या, बोत्सवाना, नाइजीरिया, जांबिया, जिंबाब्वे, बांग्लादेश, कोलंबिया, इजिप्ट, जापान, नेपाल, बुल्गारिया, तुर्की, युगांडा, मलेशिया, रोमानिया आदि देशों में भी कच्चे रेशम का उत्पादन किया जाता हैं किन्तु निम्न स्तर पर।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, इटली, जापान, भारत, फ्रांस, चीन, संयुक्त राष्ट्रसंघ, स्विजरलैंड, जर्मनी, संयुक्त अरब अमीरात, कोरिया, वियतनाम आदि विश्व में रेशम के प्रमुख उपभोक्ता है। विकसित देशों के द्वारा, विकाशील देशों से रेशम और उसके उत्पादो की मांग, विकासशील देशों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है [2]।

भारत में सेरीकल्चर (कृमिपालन) –

विश्व स्तर पर भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहॉ रेशम की सभी प्रजातियों (मलबरी, इरी, टसर तथा मूँगा) का उत्पादन होता है। भारत की जलवायु रेशम की सभी प्रजातियों के उत्पादन के लिए उपयुक्त है। भारत में मलबरी रेशम का उत्पादन वृहद स्तर पर होता है। मलबरी रेशम ने अपनी अद्वितीय चमक एवं आभा से सम्पूर्ण विश्व में अपना एक स्थान बना लिया है। देश में उत्पादित सम्पूर्ण रेशम का लगभग 75 प्रतिशत भाग मलबरी रेशम का है। भारत में मलबरी रेशम उत्पादन के इस प्रतिशत ने भारत को विश्व में द्वितीय स्थान प्रदान किया है [3]। भारत में सेरीकल्चर वास्तव में एक कुटीर उद्योग है जो कि कृषि तथा उद्योग का एक सम्मिलित रूप है। भारत के पास रेशम उत्पादन के प्रति सामर्थ्य होने के बाद भी वह रेशम जगत में अपना स्थान नहीं बना पा रहा था, इस कमी को दूर करने के लिए देश में केन्द्रिय रेशम बोर्ड की स्थापना की गई। बोर्ड की स्थापना के परिणाम स्वरूप देश में विगत कुछ वर्षों में रेशम उत्पादन में उत्तरोत्तर वृध्दि देखी गई है। इसके परिणाम स्वरूप देश के न केवल पारंपरिक अपितु गैरपारम्परिक राज्यों में भी रेशम का उत्पादन किया जा रहा है। देश के लगभग समस्त राज्यों में रेशम उत्पादन के प्रति एक क्रांतिकारी परिवर्तन देखा गया है [4]।

देश में रेशम उद्योग ग्रामीण एवं आंशिक ग्रामीण जनसंख्या के एक बडे हिस्से को आजीविका प्रदान कर रहा है अर्थात् देश की ग्रामीण जनसंख्या का एक बहुत बडा भाग रेशम उद्योग से जुडकर (प्री ककून तथा पोस्ट ककून उत्पादन में कार्यरत रहकर) अपनी आजीवीका को सुचारू रूप से चला रहा है [5]।

उददेश्य –

1. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय रेशम उद्योग की स्थिति का अध्ययन करना।
2. भारतीय रेशम उद्योग की सामर्थ्य एवं समस्याओं का अध्ययन करना।

भारतीय रेशम उत्पादन की विश्व में स्थिति –

तालिका क्रमांक 1 – विश्व में कच्चे रेशम का उत्पादन (मीट्रिक टन में)

देश	2014–15	%	2015–16	%	2016–17	%	2017–18	%	2018–19	%
ब्राजील	600	0.29	650	0.33	600	0.33	650	0.40	469	0.42
चीन	170000	84.12	158400	82.28	142000	79.99	120000	75.16	68600	62.87
भारत	28523	14.11	30348	15.76	31906	17.97	35261	22.08	35820	32.82
इरान	120	0.05	125	0.06	120	0.06	110	0.06	227	0.20
उत्तर कोरिया	350	0.17	365	0.18	365	0.20	350	0.21	370	0.33
थाइलेंड	698	0.34	712	0.36	680	0.38	680	0.42	700	0.64
उजबेकिस्तान	1200	0.59	1256	0.65	1200	0.67	1800	1.12	2037	1.86
वियतनाम	450	0.22	523	0.27	520	0.29	680	0.42	795	0.72
अन्य	131	0.06	133	0.06	116	0.06	117	0.07	93	0.08
कुल	202072	100	192512	100	177507	100	159648	100	109111	100

स्त्रोत - https://inserco.org/en/statistics

तालिका क्रमांक 1 में विगत 5 वर्षो में (2014–15 से 2018–19 तक) विश्व में कच्चे रेशम का उत्पादन (मीट्रिक टन में) प्रदर्शित है। तालिका में वर्णित ऑकडों से स्पष्ट है कि वर्ष 2014–15 से 2018–19 तक चीन के उत्पादन प्रतिशत में निरंतर कमी दर्ज की गई है। वहीं दूसरी ओर वर्ष 2014–15 से 2018–19 के मध्य भारत के रेशम उत्पादन प्रतिशत में क्रमोत्तर वृध्दि दर्ज की गई है। वर्ष 2014–15 से 2018–19 के मध्य चीन के रेशम उत्पादन प्रतिशत में लगातार कमी होने के बाद भी वह विश्व में रेशम का सर्वाधिक प्रतिशत उत्पादित करके प्रथम स्थान पर स्थित है, जबकि भारत इसी वर्ष अन्तराल में रेशम उत्पादन में वृध्दि के पश्चात भी उस लक्ष्य तक पहुँचने में असमर्थ रहा है। ऑकडों से स्पष्ट है कि वर्ष 2014–15 में भारत विश्व के कुल रेशम उत्पादन का 14.11 प्रतिशत उत्पादन कर रहा था। वर्ष 2018–19 में 18.71 प्रतिशत की वृध्दि के साथ यह बढकर 32.82 प्रतिशत हो गया है। रेशम उत्पादन में यह वृध्दि दर भारत की रेशम के क्षेत्र में सफलता को व्यक्त करती है।

भारतीय रेशम उत्पादन की स्थिति –

तालिका क्रमांक 2 – भारत में कच्चे रेशम का उत्पादन (मीट्रिक टन में)

वर्ष	मलबरी	%	टसर	%	इरी	%	मूँगा	%	कुल
2014–15	21390	74.50	2434	8.47	4726	16.46	158	0.55	28708
2015–16	20478	71.80	2819	9.88	5060	17.74	166	0.58	28523
2016–17	21273	70.10	3268	10.76	5637	18.57	170	0.56	30348
2017–18	22066	69.15	2988	9.36	6661	20.87	192	0.60	31907
2018–19	25345	71.45	2981	8.40	6910	19.48	233	0.65	35469

स्त्रोत – राज्य रेशम उत्पादन विभाग से प्राप्त एमआईएस रिपोर्ट से संकलित

*Corresponding Author: दीपिका शर्मा

चित्र क्रमांक 2 – भारत में कच्चे रेशम का उत्पादन (मीट्रिक टन में)

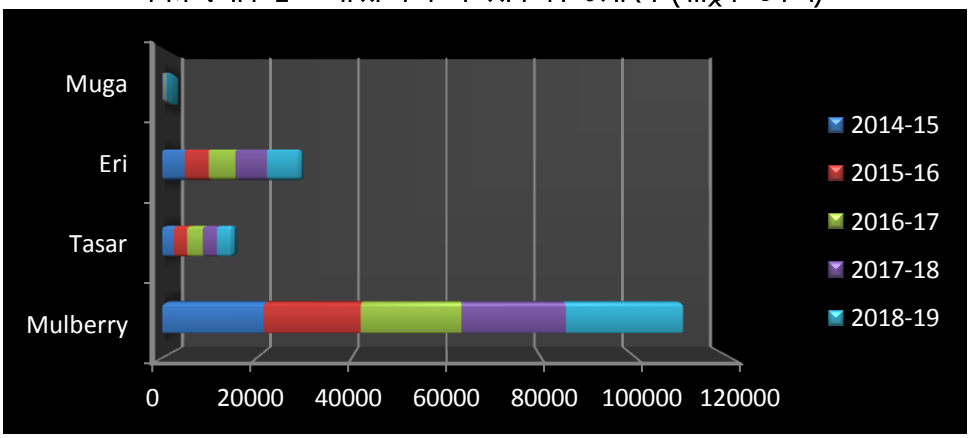

उपरोक्त तालिका 2 में विगत 5 वर्षो (2014–15 से 2018–19) में भारत में कच्चे रेशम की विभिन्न प्रजातियों (मलबरी, टसर, इरी तथा मूँगा) का उत्पादन प्रदर्शित है। तालिका से स्पष्ट है कि विगत 5 वर्षो में भारत में रेशम उत्पादन में सतत् वृध्दि हुई है। वर्ष 2014–15 से 2018–19 के मध्य भारत में 154955 मीट्रिक टन रेशम का उत्पादन किया गया है। इस समय अन्तराल देश में मलबरी रेशम का सर्वाधिक 110552 मीट्रिक टन उत्पादन हुआ तथा सबसे कम मूँगा रेशम का 919 मीट्रिक टन उत्पादन हुआ।

वर्ष 2014–15 में सबसे अधिक मलबरी रेशम का उत्पादन कुल रेशम का 74.5 प्रतिशत हुआ तथा सबसे कम मूँगा रेशम का उत्पादन 0.55 प्रतिशत हुआ। वर्ष 2015–16 में सबसे अधिक मलबरी रेशम का उत्पादन कुल रेशम का 71.8 प्रतिशत हुआ तथा सबसे कम 0.55 प्रतिशत मूँगा रेशम का उत्पादन हुआ। वर्ष 2016–17 में सबसे अधिक मलबरी रेशम का उत्पादन कुल रेशम का 70. 1 प्रतिशत हुआ तथा सबसे कम 0.56 प्रतिशत मूँगा रेशम का उत्पादन हुआ। वर्ष 2017–18 में सबसे अधिक मलबरी रेशम का उत्पादन कुल रेशम का 69.15 प्रतिशत हुआ तथा सबसे कम 0.60 प्रतिशत मूँगा रेशम का उत्पादन हुआ। वर्ष 2018–19 में सबसे अधिक मलबरी रेशम का उत्पादन कुल रेशम का 71.45 प्रतिशत हुआ तथा सबसे कम 0.65 प्रतिशत मूँगा रेशम का उत्पादन हुआ। विगत 5 वर्षो में इरी रेशम का उत्पादन प्रतिशत टसर रेशम प्रतिशत से अधिक प्राप्त हुआ। इस प्रकार ऑकडों से स्पष्ट है कि देश में रेशम उत्पादन में मलबरी रेशम प्रथम, इरी रेशम द्वितीय, टसर रेशम तृतीय तथा मूँगा रेशम चतुर्थ स्थान पर है।

भारत में रेशम का आयात तथा निर्यात –

तालिका क्रमांक 3 – भारतीय रेशम का आयात (करोड रू में)

वर्ष	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	कुल	%
कच्चा रेशम	970.82	1006.16	1092.26	1218.14	1041.40	5328.78	52.63
प्राकृतिक रेशम सूत	103.78	81.66	76.66	15.61	23.34	301.05	2.97
वस्त्र एवं बने–बनाए वस्त्र	239.01	249.46	241.74	864.81	1022.43	2617.45	25.85
सिले–सिलाए वस्त्र	18.20	15.00	12.37	650.48	742.27	1438.32	14.20
रेशम कालीन	0.43	0.05	0.11	17.34	113.09	131.02	1.29
रेशम अवशिष्ट	25.91	36.77	15.03	101.24	129.39	308.34	3.04
कुल	1358.15	1389.10	1438.17	1649.48	2031.88	10124.96	100

स्त्रोत – डीजीसीआईएस, सांख्यिकी विभाग, कोलकाता

चित्र क्रमांक 3 – भारतीय रेशम का आयात (प्रतिशत में)

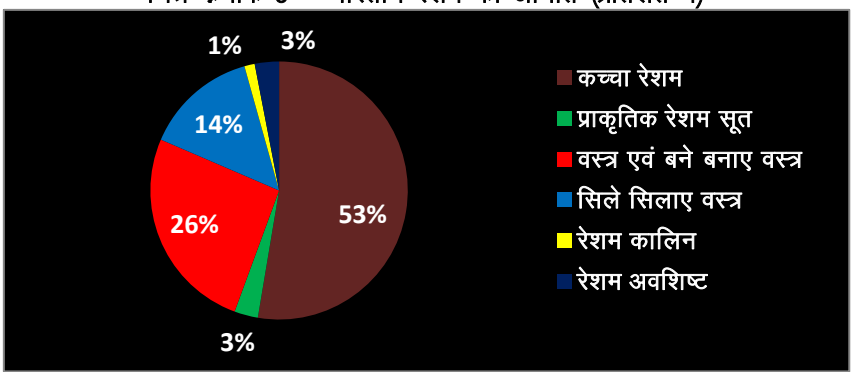

उपरोक्त तालिका क्रमांक 3 में विगत 5 वर्षो में (2014–15 से 2018–19) भारत द्वारा किये जाने वाले रेशम का आयात (करोड रू में) प्रदर्शित है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत द्वारा अन्य देशों से कच्चे रेशम, प्राकृतिक रेशम सूत, वस्त्र एवं बने–बनाए, सिले–सिलाए वस्त्र, रेशम कालीन एवं रेशम अवशिष्ट आदि का आयात किया जाता है। विगत 5 वर्षो में भारत कच्चे रेशम, वस्त्र, बने –बनाए एवं सिले–सिलाए पोशाक का मुख्य आयातक देश रहा है और इस अवधि में देश ने 10124.96 करोड रू के

रेशम का आयात किया है। ऑकडों से स्पष्ट है कि विगत 5 वर्षो में भारत ने कच्चे रेशम का सर्वाधिक 52.63 प्रतिशत आयात किया है तथा सबसे कम 1.29 प्रतिशत रेशमी कालीनो का है।

तालिका क्रमांक 4 – भारत से रेशम का निर्यात (करोड रू में) –

वर्ष	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	कुल	%
कच्चा रेशम	0.69	1.43	0.44	0.00	1.36	3.92	0.03
प्राकृतिक रेशम सूत	24.71	26.41	14.57	15.61	23.34	104.64	0.94
वस्त्र एवं बने–बनाए वस्त्र	1465.44	1280.60	1051.65	864.81	1022.43	5684.93	51.22
सिले–सिलाए वस्त्र	1214.01	1078.39	864.33	650.48	742.27	4549.48	40.99
रेशम कालीन	15.97	16.88	63.78	17.34	113.09	227.06	2.04
रेशम अवशिष्ट	109.12	89.80	98.33	101.24	129.39	527.88	4.75
कुल	2829.94	2495.98	2093.42	1649.48	2031.88	11097.91	100

स्त्रोत – डीजीसीआईएस, सांख्यिकी विभाग, कोलकाता

चित्र क्रमांक 4 – भारत से रेशम का निर्यात (करोड रू में) –

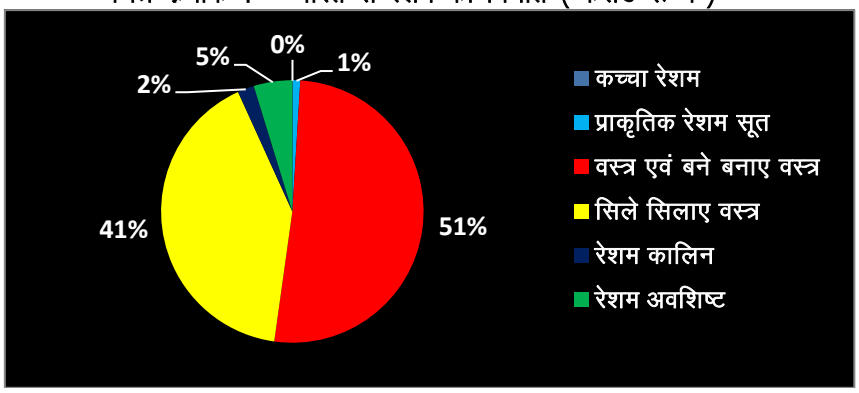

उपरोक्त तालिका क्रमांक 4 में विगत 5 वर्षो में (2014–15 से 2018–19) भारत द्वारा किये जाने वाले रेशम का निर्यात एवं उससे होने वाली आय का विवरण (करोड रू में) प्रदर्शित है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत रेशमी वस्त्रों, बने–बनाए एवं सिले–सिलाए रेशमी पोशाको का भारत मुख्य निर्यातक देश है। देश को विगत 5 वर्षो में रेशम से संबंधित सामग्रियों के निर्यात से लगभग 11097.91 करोड रू की आय हुई। भारत से किए जाने वाले कुल निर्यात का सर्वाधिक 51.22 प्रतिशत भाग केवल रेशमी वस्त्र एवं बने–बनाए वस्त्रों का है। इसके बाद लगभग 41 प्रतिशत भाग सिले–सिलाए पोशाको का है। सबसे कम निर्यात कच्चे रेशम का (0.03 प्रतिशत) किया जाता है। ऑकडो से स्पष्ट है कि वर्ष 2014–15 से 2017–18 तक रेशम सामग्रियो के निर्यात में लगातार कमी आती गई किन्तु वर्ष 2018–19 में पुनः निर्यात में वृध्दि देखी गई है। वर्ष 2017–18 में भारत से कच्चे रेशम का निर्यात नहीं किया गया था।

तालिका क्रमांक 5 – अन्य देशों को किए जाने वाले रेशम का निर्यात (करोड रू में)

देश	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	कुल	%
सं. अ. अमीरात	687.14	606.76	546.31	377.13	372.76	2590.10	24.92
सं. रा. अमेरिका	362.03	340.37	263.85	218.22	372.66	1557.13	14.98
सं. राष्ट्र	190.37	155.84	128.39	131.81	107.39	713.80	6.86
चीन	102.11	89.48	89.17	78.56	102.12	461.44	4.44
जर्मनी	95.40	73.03	107.78	63.08	72.25	411.54	3.96
फ्रांस	91.36	90.43	78.61	57.24	67.24	384.88	3.70
इटली	97.38	79.58	73.72	53.84	57.78	362.30	3.48
अन्य	1043.27	766.46	805.57	669.62	625.09	3910.01	37.62
कुल	2606.09	2201.95	2093.40	1649.50	1777.29	10391.20	100

स्त्रोत – डीजीसीआईएस, कोलकाता एवं वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की वेबसाइड

उपरोक्त तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट है कि संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात तथा संयुक्त राष्ट्र भारत के मुख्य रेशम निर्यातक देश है। वर्ष 2014–15 से 2018–19 के मध्य संयुक्त राज्य अमीरात से रेशम के निर्यात द्वारा प्राप्त पूंजी में लगातार कमी आई है। इसी वर्ष अन्तराल में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा चीन से भी निर्यातक पूंजी में सतत 4 वर्ष तक कमी के पश्चात पुनः वृध्दि देखी गई है। ऑकडों से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2014–15 से वर्ष 2017–18 तक भारत को रेशम के निर्यात से प्राप्त आय में लगातार कमी आती गई थी जिसे वर्ष 2018–19 में पुनः वृध्दि प्राप्त हुई है। पिछले 5 वर्षो में भारत को रेशम के निर्यात से 10492.81 करोड रू की आय प्राप्त हुई है।

*Corresponding Author: दीपिका शर्मा

भारतीय रेशम उद्योग की सामर्थ्य –

रेशम उत्पादन एकमात्र ऐसी नकदी फसल है जिसे छोटे से छोटे या सीमित संसाधन वाले किसान अपना कर आकर्षक आय प्राप्त कर सकते है [6]। सेरीकल्चर एकमात्र नकदी फसल है, जो देश के उष्णकटिबंधीय राज्यों में कृष्को को लगभग 140000 रू की वार्षिक आय प्रदान कर रही है [7]। इस उद्योग ने देश की ग्रामीण जनता को रोजगार तथा आय में वृध्दि का अवसर प्रदान किया है। जिससे ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोगो की जीवन शैली में सुधार आया है। इस उद्योग के कारण गॉव से शहर में रोजगार के लिए होने वाले पलायन में कमी आई है [8]। यह कृषि आधारित कुटीर उद्योग ग्रामीण किसानों के लिए कल्पवृक्ष या गरीब एवं दलितों के लिए कामधेनु कहा जाता है [9]।

भारत, चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बडा रेशम उत्पादक देश है। जो कि खेत से लेकर कपडे के निर्माण तक 8.5 करोड लोगो को रोजगार प्रदान करता है [2]। अपनी उच्च रोजगार क्षमता, कम पूंजी की आवश्यकता, न्यूनतम भूमि और कम पारिश्रमिक प्रकृति के कारण सेरीकल्चर लाखों लोगों के लिए आजीविका का एकमात्र सुगम साधन अथवा अवसर प्रदान करता है। सेरीकल्चर अपनी पर्यावरण अनुकूल उत्पादन प्रक्रिया और उच्च क्षमता के कारण जैव प्रौद्योगिकी विकास के लिए एक आदर्श उपकरण बन गया है। यह उद्योग महिलाओं और आदिवासी समुदाय के सशक्तिकरण का एक सरल साधन है [10]।

इस उद्योग में कठोर श्रम की आवश्यकता नहीं होती है तथा सामान्यतः ककून उत्पादन को महिलाओं एवं बुजुर्गो के द्वारा सम्पादित किया जाता है। सेरीकल्चर के लिए उच्चतम तकनीकी उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है। मलबरी के पौधे किसी भी प्रकार की भूमि (विशेष रूप से पथरीली, पहाडी एवं बंजर) पर आसानी से वृध्दि कर लेते है। अधिकांशतः पहाडी क्षेत्रों में निवास करने वाली जनजाति द्वारा नॉन मलबरी रेशम का उत्पादन किया जाता है। अनुकूल परिस्थिति में किसानों के द्वारा सेरीकल्चर एवं अन्य फसल का उत्पादन साथ – साथ किया जा सकता है। सेरीकल्चर अन्य फसलों से होने वाली आय की तुलना में अधिक आय प्रदान करती है। सेरीकल्चर एकमात्र ऐसी फसल है जो वर्ष में 4 से 5 बार उत्पादित की जा सकती है, जबकि अन्य फसलों का उत्पादन वर्ष में केवल एक बार और मौसम के आधार पर बदल – बदल कर किया जाता है।

भारतीय रेशम उद्योग की क्षमता को निम्न बिंदुओं के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है :

- कच्चे रेशम की उत्पादन क्षमता
- रेशम की समस्त प्रजातियों का उत्पादन
- रेशम का न्यूनतम आयात
- रेशम का अधिकतम निर्यात
- विशाल कुटीर उद्योग
- सुगम एवं सरल रेशम निर्माण प्रक्रम

भारतीय रेशम उद्योग की समस्याएं –

यद्यपि भारतीय रेशम उद्योग देश की ग्रामीण जनता के लिए वरदान साबित हुआ है। किन्तु भारत के पास रेशम उत्पादन के लिए अनुकुल परिस्थितियॉ एवं सामर्थ्य होने के बावजूद भी कुछ समस्याएं इसकी प्रगति के मार्ग में बाधा बनी हुई है। जैसे कि –

- **निर्यातक मूल्य** – भारत से रेशम या उससे निर्मित सामग्रियों का न्यूनतम मुल्य पर निर्यात किया जाता है, जबकि उसके उत्पादन एवं निर्माण में होने वाली लागत उच्च होती है।
- **लागत एवं आय का अनुपात** – रेशम के उत्पादन में लगने वाली लागत एवं उससे होने आय में बहुत अन्तर होने के कारण भी किसान इसे अपनाने से कतराते है।
- **तकनीकी का अभाव** – देश के अधिकांश राज्य ऐसे है जहां आज भी पारंपरिक तरीको से ही रेशम का उत्पादन किया जा रहा हैं। अतः तकनीकी के अनुप्रयोग का अभाव भी रेशम का उत्पादन और उसकी गुणवत्ता दोनों को प्रभावित कर रहा है।
- **अमानक बीजों का प्रयोग** – निम्न गुणवत्ता के अमानक बीजों के उपयोग के परिणाम स्वरूप रेशम उत्पादन प्रभावित हो रहा है।
- **दिशा–निर्देशो का अभाव** – मलबरी की खेती एवं ककून उत्पादन से संबंधित आवश्यक दिशा – निर्देशों की कमी के कारण भी रेशम उत्पादन में किसानों को हानि का वहन करना पडता है। जैसे – रेशम कीटो को रोगमुक्त रखने के लिए दी जाने वाली जानकारी के अभाव में रेशम कीट संक्रमित हो कर मर जाते है। जिसके परिणाम स्वरूप पालित कीटो से होने वाले ककून के उत्पादन में कमी हो जाती है।
- **उचित प्रबंधन एवं संसाधनों की कमी** – उत्पादित ककून के उचित प्रबंधन की कमी होने के कारण ककून अच्छा होने के बावजूद खराब हो जाता है और किसान को उसका उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। उत्पादित ककून को ग्रामीण क्षैत्र से संग्रहित रेशम व्यापारिक केन्द्र पर भेजा जाता है। जहॉ ककून के मूल्य का आकलन होता है किन्तु कई राज्यों में इस प्रकार के केन्द्रो का अभाव होने के कारण इन्हे दूरस्थ राज्यों में भेजा जाता है। जिसके लिए पर्याप्त संसाधनों की कमी के कारण ककून प्रभावित हो जाता है और उत्पादन का संपूर्ण लाभ नहीं मिल पाता है।
- **रेशम व्यापार केन्द्रो का अभाव** – देश के प्रत्येक राज्य में रेशम के व्यापार केन्द्रो का अभाव होने से भी इसका प्रत्येक राज्य में होने वाला उत्पादन प्रभावित होता है क्योकि उत्पादक को उसके उत्पादन का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।
- **आर्थिक सहायता** – रेशम कीट पालन के अंतर्गत कीटो के रोग संक्रमित हो जाने से ककून का निर्माण प्रभावित हो जाता है और इससे होने वाली हानि का वहन स्वयं किसान को करना होता है। इसके लिए शासन द्वारा कोई आर्थिक मदद या हर्जाना नहीं दिया जाता है। जिससे किसान को सेरीकल्चर को अपनाने में संकोच होता है।
- **आयात – निर्यात का अनुपात** – इसके अतिरिक्त भारत अन्य देशों से रेशम का आयात, निर्यात की तुलना में अधिक करता है। विश्व में रेशम की मॉग और पूर्ति की जानकारी का अभाव भी रेशम की प्रगति में बाधक है।

इस प्रकार उपरोक्त बिन्दु भारत में रेशम उत्पादन और उन्नति की प्रमुख बाधाऍ है।

*Corresponding Author: दीपिका शर्मा

उपसंहार –

भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जहॉ रेशम की सभी प्रजातियों (मलबरी, इरी, टसर तथा मूँगा) का उत्पादन होता है। भारत की जलवायु, महिलाओं का सेरीकल्चर में योगदान, देश में रेशम के उत्पादन में सतत् वृध्दि, रेशम संबंधित सामग्रियों के निर्माण में स्वावलंबन, रेशम का मुख्य निर्यातक एवं सुगम रोजगार आदि बिंदु भारत में रेशम को नवीनतम ऊंचाईयों पर पहुँचाने की सामर्थ्य को इंगित करता है। देश में केन्द्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना रेशम को उद्योग का स्वरूप प्रदान करने के उददेश्य से की गई थी और इसके प्रयासो से प्राप्त परिणामों से इस बोर्ड की स्थापना की सार्थकता सिध्द हो रही है। केन्द्रिय रेशम बोर्ड के अथक प्रयासो के परिणाम स्वरूप संपूर्ण देश में रेशम उत्पादन को प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है।

वर्तमान समय में भारत विश्व में निश्चित रेशम उत्पादन की दृष्टि से द्वितीय स्थान पर है। किंतु चीन के सापेक्ष भारत के ये सभी प्रयास कही ना कही कमियों को प्रकट करते है क्योंकि चीन सम्पूर्ण विश्व में उत्पादित रेशम का 62 प्रतिशत भाग प्रदान करता है वही भारत मात्र 32 प्रतिशत भाग का उत्पादन करता है। फिर भी रेशम उत्पादन में होने वाले प्रयास इस आशा को जीवंत रखते है कि भविष्य में भारत में रेशम उत्पादन एक उद्योग का रूप लेकर अपने उददेश्यो को निश्चित रूप से प्राप्त कर विश्व में अपना अद्वितीय स्थान प्राप्त करेगा।

संदर्भ सूची

1. दाता रफात के, नानावटी महेश, ग्लोबल सिल्क इण्डस्टि : ए कम्पलीट सोर्स बुक, **2001**
2. एमपीअल ए एस, फेनींग के ओ, ओफोसु अमीन जे, ओबेंग ओफोरीड, एनटानु पी के, द स्टेटस आफ सेरीकल्चर इन घना, जे.ई. एन.आर.एम., **2014**, 1(2) : पेज – 75 से 79
3. कासी इ, पॉवरटी एण्ड डेवलपमेंट इन ए मार्जिनल कम्युनिटी : केस स्टडी आफ ए सेटलमेंट आफ द सुगाली टाइब इन आंध्रप्रदेश, भारत, जनरल आफ एशीयन एण्ड अफरीकन स्टडीज, **2011**, 46 : पेज – 5 से 18
4. देवांगन एस के, साहु के आर एवं अचरी के वी, सेरीकल्चर : ए टुल आफ इको सिस्टम चेकिंग थ्रु टाइबल, जनरल आफ एनवायरोमेंटल रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, **2011,** 6(1)
5. निसार ए, गनी, अफीफा एस, कामीली, बाकुल एम एफ, शर्मा आर के, दर के ए, खान आइ एल, इण्डीयन सेरीकल्चर इण्डस्टि वीथ परटीकुलर रेफरेंस टु जम्मु एण्ड कश्मीर, आइ. जे. ए. बी. आर. ए, **2012**, 2(2) : पेज – 194 से 202
6. आचार्य जे, सेरीकल्चर डेवलपमेंट, इण्डीयन पब्लिसर्स एण्ड डिस्टीब्युटर्स, नई दिल्ली, **1993,** 5
7. जगन्नाथ एन, इमपेक्ट ऑफ सेरीकल्चर आन इनकम एण्ड ऐमप्लायमेंट जनरेशन, इण्डीयन सिल्क, **1995,** 33(9) : पेज – 11 से 16
8. मारिल्ला एस, जनरल आफ बायलोजिकल एण्ड केमिकल रिसर्च एण्ड इंटरनेशनल जनरल ऑफ लाइफ साइंस एण्ड केमिस्टि, **2013**, 30(2) : पेज – 959 से 990
9. मनीराजु, सेरीकल्चर ए टूल फार रूरल डेवलपमेंट, सेन्टल सिल्क बोर्ड, बैगलोर, **1988**, 35
10. सेरि स्टेट ऑफ इंडिया – ए प्रोफाइल 2019 – सेन्टल सिल्क बोर्ड, बैगलोर, **2019**, पेज – 1

*Corresponding Author: दीपिका शर्मा